झारसीम

अखिल भारतीय समन्वित कुक्कुट शोध परियोजना
राँची पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय
अनुसंधान निदेशालय
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची

झारसीम

कुक्कुट उत्पादन के अद्‌भुत विकास से शहरी एवं इसके आस -पास के क्षेत्रों में अण्डों एवं माँस के उपभोग में बढ़त हुई है। मार्केटिंग प्रबंधन पद्धति प्रभावात्मक न होने के कारण यह कुक्कुट उत्पादन अधिकतह ग्रामीण-आदिवासीय क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाते हैं, साथ ही शहरी क्षेत्रों की तुलना में यहाँ इनके दाम काफी अधिक होते है, इसी कारण यहाँ इनका उपभोग कम होता है। यहाँ मुख्य आहार के रूप में कार्बोहाईड्रेट से पुष्ट धान्यों का उपभोग अधिक होता है, जिसमें प्रोटीन स्त्रोत अत्यल्प होते हैं। जिसके फलस्वरूप ग्रामीण-आदिवासी क्षेत्रों के दुर्बल लोग प्रोटीन की कमी के शिकार होते हैं। दैनिक आहार में प्रोटीन कम होने से शारीरिक विकास में कमी एवं गर्भवती महिलाए, दुग्धपालन कराने वाली माताएँ एवं बच्चों में बीमारियों को सहने की शक्ति कम होती है। ग्रामीण-आदिवासी क्षेत्रो में छोटे तौर पर ग्रामीण कुक्कुट पालन को अपनाने से अधिक गुणवत्ताधारी प्रोटीनों के साथ - साथ अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते है। विभिन्न कुक्कुट नस्लों को लेते हुए ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में कुक्कुट पालन करने से यह मौसम के विविध परिस्थितियों में अच्छी तरह जी लेते हैं साथ ही इनके रख-रखाव, दाना एवं प्रबंधन पर कम खर्च होता है। ग्रामीण-आदिवासी जनता के सर्वोन्मुखी विकास के लिए इनका पालन अत्यन्त लाभकारी होगा।

गहन व्यावसायिक ब्रायलर उत्पादन हेतु सफेद परों वाले कुक्कुट ही उपयुक्त होते हैं। लेकिन ग्रामीण परिवेश में ब्रायलर उत्पादन संभव नहीं हो पाता है। इस लिए ग्रामीण परिवेश के लिए वैसे ही मुर्गी की जरूरत है जो बैक्यार्ड पद्धति में पाली जा सके। इन बातों को ध्यान में रखते हुए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा एक ऐसी प्रजाति विकसित की गई जिसे ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में एवं मौसम के विविध परिस्थितियों में बैक्यार्ड पद्धति में पालन किया जा सकता है। इन कुक्कुटों का प्रतिपादन काफी अच्छा होता है। इनके पर विविध रंगों में होने के कारण इसे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय, सांस्कृतिक एवं परंपरागत

मान्यताओं के चलते अधिक महत्व दिया जाता हैं। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय एवं मुर्गी पालन परियोजन निदेशालय हैदराबाद ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए आकर्षक बहु-रंगीन एवं मजबूत कुक्कुट झारसीम का विकास किया है। ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में यह कुक्कुट अधिक अनुकूलतम वातावरण के न होने पर भी अच्छी तरह जी लेते हैं। लगभग देशी मुर्गियों की तरह ही इसे पाला जा सकता है।

पठिका -1 : झारसीम का प्रतिपादन

मानदंड	
वजन (ग्रा॰) तीन महीने की आयु पर	1250-1500
ड्रेसिंग	70 प्रतिशत
अंडा उत्पादन (ग्रामीण परिवेश, 72 सप्ताह में)	110-130
मुत्यु दर % (72 सप्ताह तक)	< 10 प्रतिशत
अंडे का वजन	50-55 ग्राम

लाभ

- आकर्षक एवं बहु-रंगी पंख
- बेहतर उत्तर - जीविता
- दाना पर कम खर्च
- साधारण पोषण द्वारा समशीतोष्ण-रूक्ष वातावरण की स्थितियों में अपनाने योग्य
- दुर्बल जन-समूहों में प्रोटीन कुपोषण को मिटाना
- माँस का अधिक उपज
- महिलाओं के अधिकारों को शक्ति प्रदान करना

पालन - पोषण

आवश्यक तापमान प्रदान करते हुए परजीवियों के शिकार से बचाए रखें।

कुक्कुट गृहों एवं अन्य सामग्री को साफ रखें।

- कुक्कुट गृहों के सभी सामान साफ रखें।
- फर्श, दीवारों को झाड़-पोछ कर साफ करते रहें।
- फ्लेम गन के ताप से दीवारों, मेश को साफ करते रहें।
- गर्म पानी की तेज धारा से कुक्कुट गृहों की सफाई करें ।
- कुक्कुट गृहों में संक्रामक रोगाणु नाशक दवा का छिड़काव करें।

नर्सरी गृह की तैयारी : कुक्कुट गृहों में 2-3 इंच के मोटापे के साफ लिटर पदार्थों (मूँग फली का छिलका, धान का भूसा, बुरादा, इत्यदि...) को एक समान रूप में बिछाएं। इस पर समाचार पत्रों को अच्छी तरह बिछाएं ताकि चूजे लिटर पदार्थ खा न सके। जगह - जगह पर फीडर एवं ड्रिंकर भी उपलब्ध करें।

ब्रुडर : बिजली के बल्बों का उपयोग करें। चहल-पहल करते हुए चूजों को बिजली के निकट पहुँचने से रोकने के लिए चिक गार्ड का उपयोग किया जा सकता है। यह चिक गार्ड चूजो के विचरण के स्थान से तीन फीट की दूरी पर लगाये जाएं।

पानी : हर 2 मीटर की दूरी पर पीने के लिए साफ - ताजा एवं ठंडा पानी उपलब्ध करें। बिजली के बल्ब की कृत्रिम गर्मी के एक मीटर के दायरे के भीतर ड्रिंकर लगाए जाए। पानी के लिए प्रति 100 चूजो को एक जल केन्द्र बिन्दु रखी जाए।

दाना : समस्त ब्रूडिंग क्षेत्र के फीडरो में एक समान रूप में दाना डाला जाए। यह सुनिश्चित कर लें कि, सभी चूजे आसानी से दाना ग्रहण कर सकें। दिन में दो से तीन बार दाना दिया जाए। दाना डालते समय दाने की कटोरी में मात्र 70 प्रतिशत दाना डाला जाए। जैसे-जैसे कुक्कुट बढ़ते रहें, वैसे-वैसे इनके रहने की स्थान की व्यापकता बढ़ाते रहें साथ ही आवश्यकतानुसार फीडर एवं ड्रिंकर भी लगाये जाएं।

स्वास्थ्य : इन नस्ल में अधिक रोग निरोधक शक्ति है, फिर भी इन्हें दवाई (पट्टिका-2 देखें) दी जाए।

लिटर : कुक्कुट गृहों के फर्श पर लिटर/भूसा लेकर 2-3 इंच के मोटापे में एक समान रूप में बिछाएं। समय-समय पर इस लिटर पदार्थ का मिश्रण करते रहें ताकि यह लिटर पदार्थ रहते-रहते टिक्की जैसे न हो जाएं। गीले लिटर पदार्थ को तुरंत बदल कर ताजा लिटर पदार्थ डालते रहें।

प्रबंधन : झारसीम कुक्कुटों के पंखो के रंग काफी अकर्षक होते है, इसे समशीतोष्ण परिस्थितियों में अच्छी तरह अपनाया जा सकता है। चूजों को ब्रूडिंग के दौरान आरंभिक चार सप्ताह तक विशेष ध्यान दें। कुक्कुटों को मारेक्स, न्यूकेसल/रानीखेत एवं IBD बीमारियों के विरूद्ध टीकाकरण अवश्य करें। इनके जीवन काल के दौरान स्वच्छ एवं शद्ध पेय जल उपलब्ध करें साथ ही यह सिफारिश की जाती है कि, पहले पाँच दिनों के दौरान इन्हें पीने के पानी में रोग प्रतीकारक दवा की एक खुराक मिलाकर दी जाए। पहले दिन चूजों को इलक्ट्रॉलाइट या अन्य कोई तनावरोधक दवा पानी में मिलाकर दें। जब भी कुक्कुटों को टीकाकरण किया जाता है तब इस टीकाकरण से पूर्व एवं पश्चात् तनावरोधक दवा अवश्य दी जाए। छह सप्ताह की आयु के बाद इन्हें आंगन बाड़ी में चरनें के लिए छोड़े।

पठिका 2 : टीका करण सारिणी

आयु (दिन)	दवाई	खुराक	पद्धति
1	मारेक्स बीमारी	0.20 ml	इंजेक्शन
7	न्यूकेसल/रानीखेत बीमारी (लसोटा)	एक बूँद	आँखों में
14	गमबोरो (मध्यवर्ती)	एक बूँद	मुँह में
28	न्यूकेसल/रानीखेत बीमारी (लसोटा)	एक बूँद	आँखों में
42	फौल पोक्स (चेचक)	0.2 ml	इंजेक्शन
56	रानीखेत बीमारी (आर 2 बी)	0.5 ml	इंजेक्शन

आपूर्ति : एक दिन की आयु के झारसीम चूजों की प्राप्ति के लिए रकम की अग्रिम अदायगी करनी होगी। यह अदायगी निदेशक, अनुसंधान/मुख्य वैज्ञानिक मुर्गी पालन परियोजना बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में जमा करें, आपूर्ति की सही तिथि की जानकारी देने के लिए ग्राहक से निवेदन किया जाता कि वे अपने पत्र में दूरभाष नंबर अवश्य दें। अग्रिम अदायगी प्राप्त होने के बाद ग्राहक को चूजों की आपूर्ति की सही तिथि की सूचना दी जाएगी, तत्पश्चात् ग्राहक इस परियोजना से चूजें प्राप्त कर सकते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

अखिल भारतीय समन्वित कुक्कुट शोध परियोजना
राँची पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय
अनुसंधान निदेशालय
बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, राँची

प्रतिपादित :
डॉ॰ सुशील प्रसाद, डॉ॰ रविन्द्र कुमार एवं डॉ॰ निशांत पटेल